VOL- VII | ISSUE- III | MARCH | 2020 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 6.293 | ISSN 2349-638x

' पचपन खंभे लाल दीवारें ' उपन्यास में व्यक्त स्त्री समस्याएँ

प्रो. डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
शिवजागृती वरिष्ठ महाविद्यालय,
नलेगाँव ता. चाकुर जि. लातूर।

सन 1950 के बाद हिंदी साहित्य में उभरनेवाली विविध महिला कथाकारों में से उषा प्रियंवदा का स्थान अद्वितीय रहा है। आपका जन्म 14 सितंबर 1931 को कानपुर में सक्सेना कायस्थ परिवार में हुआ। पिता का नाम दामोदर सक्सेना था, जो शहर के मशहूर वकील थे और मां प्रियंवदा एक सुंदर सुशील महिला थी। पिता की मृत्यु के पश्चात उषा जी ने अपने नाम के आगे प्रियंवदा अर्थात मां का नाम जोड़ दिया, जो विवाह के पश्चात भी बना रहा। उषा जी के दो भाई जिसमें बड़े भाई होरीलाल सक्सेना प्रोफेसर थे, तो दूसरे भाई शिब्बनलाल प्रतिभा संपन्न और गांधीवादी विचारधारा के थे और कमला तथा कामिनी दो बहनें थी। मां के पुस्तक के प्रति प्रेम का प्रभाव उषा जी पर पड़ा हुआ दिखाई देता है।

शिक्षा के प्रति बचपन से ही उषा जी में आकर्षण रहा है। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए., डी.लिट्. तथा अंग्रेजी साहित्य में पीएच.डी.की उपाधि प्राप्त की। इलाहाबाद में अपनी बहन के घर रहकर अध्ययन किया और वही प्रयाग में हरीशवंशराय बच्चन तथा सुमित्रानंदन पंत जैसे बड़ेलेखक का आपसे परिचय भी हुआ। अध्ययन के प्रति अपनी रुचि के कारण उषा जी ने बचपन से ही चंद्रकांता संतति चांद, माधुरी आदि का अध्ययन किया था। अपनी अध्ययनशीलता की प्रवृत्ति ने हीं उन्हें अमेरीका तक पहुंचाया। विदेश में रहकर ही उन्होंने हिंदी भाषा में कई कहानियां लिखी। अमेरिका में उन्होंने श्री किम विल्सन से विवाह किया, जो हावर्ड विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं। उषा जी का अपने पति के प्रति अत्यधिक स्नेह था। खास बात यह है कि भिन्न-भिन्न संस्कृति के रहने के बावजूद दोनों का दांपत्य जीवन सफल रहा है। उषा जी भले ही अमेरिका में बसी हो लेकिन उनका मन पूर्णतः भारतीय ही रहा है।

बचपन से ही उषा जी का हिंदी साहित्य लेखन अविरत रूप से चलते आ रहा है। उन्होंने फिर बसंत आया, जिंदगी और गुलाब का फूल, एक कोई दूसरा, कितना बड़ा झूठ आदि कहानी संग्रह लिखें, तो रुकेगी नहीं राधिका, शेष यात्रा, अंतर्वशी, भया कबीर उदास और पचपन खंभे लाल दीवारें जैसे उपन्यास भी लिखे हैं। इनका सबसे चर्चित उपन्यास 'पचपन खंभे लाल दीवारें' है, जो 1961 में प्रकाशित हुआ। यहां इस उपन्यास को निम्नलिखित मुद्दों के द्वारा समझा जा सकता है। जैसे -

1) कथावस्तु :-

लेखिका ने इस उपन्यास में व्यक्ति, परिवार, स्त्री- पुरुष संबंध आदि का चित्रण करने का प्रयास किया है उपन्यास में सुषमा नायिका के रूप में चित्रित हुई है, जो आरंभ से अंत तक कथानक में छाई हुई रहती है। वह एक त्यागमई नारी तथा भारतीय नारी को प्रस्तुत करती है। उसे संजय, विनय दो भाई और निरुपमा, प्रतिमा दो बहने हैं। घर की संपूर्ण जिम्मेदारी उसके कंधों पर है। वह अपने बारे में न सोचकर हमेशा परिवार के बारे में सोचती रहती है। उसकी इस सोच को लेकर कृष्णा मौसी सुषमा को को कहती भी है कि," कुछ अपने बारे में भी सोचा सुषमा ! यह भाई- बहन किसी के नहीं होते। सब अपने - अपने घर के होंगे। आज की दुनिया में कौन किसका होता है"1 तभी सुषमा का यह कहना कि," पर इन सबको भी तो मदद की जरूरत है मौसी ! पिताजी को पेंशन मिलती ही कितनी है ? उसमें तो दो वक्त दाल - रोटी भी न चले। मैं भी अगर न करूं तो किसके आगे हाथ फैलाएँगे ? लड़कों को पढ़ाना है ही, सड़क पर तो आवारा घूमने नहीं दिया जाएगा।"2 इससे परिवार के प्रति उसका स्नेह और दायित्व स्पष्ट हो जाता है। सुषमा अपने परिवार का पालन - पोषण करते - करते समय से पहले प्रौढ़ बन

जाती है। आयु के तैंतीस वर्ष होने के बावजूद उसने अपनी कोमल भावनाओं को मन ही मन दबा दिया है। सुषमा की आमदनी पर पूरा घर चलता है, इसीलिए माता-पिता भी उसका विवाह करना नहीं चाहते। वह पड़ोसी युवक नारायण से प्रेम तो करती है, लेकिन परिस्थियों के आगे उसकी विवाह की कल्पना उसका सपना मात्र बन कर रह जाती है। महाविद्यालय में अध्यापन का कार्य करते- करते उसकी होस्टल की वार्डन के रूप में नियुक्ति होती है, उसी समय उसके जीवन में नील कस्यप नामक युवक आता है, जिससे सुषमा का बिखरा हुआ जीवन फिर से खिल जाता है। उसमें नारी चेतना संचरित होती है। वह एक बार फिर अपने अधूरेपन को पूरा करना चाहती है क्योंकि नील जो उसके जीवन में हरियाली लेकर आया था। लेकिन अपने लोगों द्वारा अपनी जिम्मेदारियों का एहसास कराने के बाद वह नील से दूर होने का निर्णय लेती हैऔर उसे फिर वही चार दीवारों के बीच घीसीपीटी जिंदगी जीने के लिए विवश होना पड़ता है।

2) मूलसंवेदना:-

' पचपन खंभे लाल दीवारें' यह उषा प्रियंवदा का एक संवेदनशील नारी की प्रतिबद्धता की करुण कहानी को बयान करनेवाला उपन्यास है। यह उषा प्रियंवदा का पहला उपन्यास है, जिसमें सुषमा नामक 33 वर्षीय सुशिक्षित महिला की सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं से उत्पन्न कुंठा का सजीव चित्रण है। वह अपनी पारिवारिक प्रतिबद्धता के कारण अपनी इच्छाओं का दमन करती रहती है वह जो चाहती है, वह कर नहीं सकती और जो नहीं चाहती, वह करती जाती है, यह उसके जीवन की विडंबना है। उसे अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी निभानी चाहिए यह एक आदर्श स्थिति है, तो उसे अपनी इच्छाएं पूरी करनी चाहिए यह भी एक यथार्थ स्थिति हैलगता है मानो आदर्श और यथार्थ इन दो पाटों के बीच पिसना उसकी नीयति है। किस प्रकार नारी को समाज की नित नई परिस्थितियों में जाने अनजाने भीतर ही भीतर घुटना पड़ता है। उसकी अंतरव्यथा का बड़ा ही सूक्ष्म और मार्मिक चित्रण सुषमा के माध्यम से लेखिका ने यहां प्रस्तुत किया है।

3) सामाजिक समस्या :-

उषा प्रियंवदा ने इस उपन्यास में मध्यवर्गीय भारतीय समाज के परिवेश को चित्रित किया है। उपन्यास की नायिका सुषमा ऐसी ही एक मध्यवर्गीय परिवार की बड़ी बेटी है जो निरंतर आर्थिक कष्ट के बीच पिसती रहती है। भारतीय समाज में बेटा बेटी के शादी को लेकर माता पिता हमेशा यह मानते हैं क्यों न उनके लिए एक ऊंचा और धनी परिवार के साथ रिश्ता तय हो जाए, प्रेम को भी इस दायरे से वे दूर रखते हैं और केवल पैसे को महत्व देते हैं। यही कारण है कि नारायण के साथ सुषमा का प्रेम होने के बावजूद नारायण के परिवार वाले एक धनी घर की बेटी के साथ नारायण का विवाह कर देते हैं और सुषमा का प्रेम केवल एक तमाशा मात्र बनकर रह जाता है और सुषमा की मां इसे केवल भाग्य का लेखा-जोखा मात्र मानने लगती है। नारायण के बेटे के नामकरण के पश्चात घर आते ही मां का सुषमा से कहना कि," वकीलन तो बहुत चाहती थी, वही राजी नहीं हुए। जिसका जहां, जिससे संजोग जुड़ा होता है वही होता है। हमारे करने- न- करने से क्या होता है!"3 इतना ही नहीं उसका आगे यह कहना कि," रूप को रोवे ं, भाग की खावे ं। बड़ा जबरदस्त भाग लेकर आई है नारायण की बहू। देखो तो, सभी कुछ था, अब लड़का भी हो गया।"4 यह मां की भाग्य को लेकर चलने की वृत्ति को ही स्पष्ट करता है। यह बात सुषमा की बहन निरुपमा के साथ भी होती है। नीरुपमा पड़ोस के एक गरीब और होनहार लड़के ब्रजमोहन से प्यार करती है, लेकिन मां उसे गरीब समझकर उसके साथ शादी करना नहीं चाहती। सुषमा के परिहास के साथ यह कहने पर कि अगर वह डिप्टी कलेक्टर ही में आ गया, तो उससे नीरु की शादी कर दोगी क्या? तब माँ का यह कहना कि," डिप्टी कलेक्टर क्या, वह कमिश्नर भी हो जाए, मैं उससे क्यों शादी करूंगी अपनी बेटी की ? वाह ! क्या बिरादरी में लड़कों की कमी है जो मैं उस कंगले को बेटी ब्याहूँ ?"5 यह उस भारतीय मानसिकता को व्यक्त करता है जो प्रेम से भी बढ़कर धन और दौलत को मानते हैं। यह सामाजिक मानसिकता की समस्या ही भारतीय स्त्री के विकास में रोडे डालने का कार्य करती आई है।

4) प्रेमगत समस्या :-

प्रेम ही वह धागा है,जो मनुष्य को एक दूसरे के साथ जोड़ता है। इसीलिए प्रेम को जीवन की आधारशीला कहा गया है। प्रेम के अभाव में मनुष्य के जीवन में घुटन सी आती है। इस उपन्यास में ऐसी ही घुटन सुषमा के जीवन में आयी हुई है। सुषमा अपने पारिवार की जिम्मेदारी उठाते- उठाते अपने आप को भूल जाती है। परिणाम स्वरुप उसका जीवन नीरस हो जाता है और ऐसे नीरस जीवन में जब नील का प्रवेश हो जाता है, तब उसके जीवन में हरियाली सी छा जाती है। लेकिन सामाजिक डर, आर्थिक अभाव और अपने पारिवारिक दायित्व के कारण वह अपने प्रेम को न स्वीकार कर सकती है और न उसे आगे बढ़ा सकती है। वह अपने परिवार के लिए अपने प्रेम को दबाते हुए नील को अपने जीवन से चले जाने को कहती है, तब नील कहता भी है कि," ठीक है, तुम यहीं रहो, इन पचपन खंभों में बंदी होकर। मैं तुम्हारे बहकावे में आ गया था। मैं सोचने लगा था कि तुम्हारे लिए मैं ही सब कुछ बन गया हूँ। अब मैंने जाना कि तुम्हारे पास खूबसूरत चेहरे के अलावा एक बहुत व्यावहारिक बुद्धि और अपना भला समझने वाला दिमाग भी है।"6 वह हाताश होकर चला जाता है लेकिन सुषमा उसे भूला नहीं पाती। उसे बार-बार प्रेम में असफल होने के कारण आत्महत्या करने वाली स्वाति नजर आती है। नील के चले जाने के बाद उसका यह सोचना कि," नील के बगैर मैं कुछ भी नहीं हूँ, केवल यह छाया, एक खोए हुए स्वर की प्रतिध्वनि ; और अब ऐसी रहूंगी, मन की वीरानियों में भटकती हुई।"6 यह उसकी प्रेमगत समस्या को ही व्यक्त करता है।

5) आर्थिक समस्या :-

आज के युग में संपत्ति इतनी महत्वपूर्ण बन गई है कि उसके आगे मनुष्य की भावनाओं का कोई महत्व नहीं रहा है। परिवार का भरण पोषण केवल एक पुरुष पर निर्भर नहीं होता, हर एक सदस्य को उसमें साझेदारी निभानी पड़ती है। ऐसे समय स्त्रियों को भी घर के कामकाज के अतिरिक्त आमदनी का स्त्रोत ढूंढना पड़ता है। आर्थिक अभाव के कारण परिवार के सदस्य चिंतित हो जाते हैं। इस उपन्यास की नायिका सुषमा भी आर्थिक समस्या का शिकार हो गई है। वह परिवार के लिए अपने प्रेम की बलि देती है। आर्थिक अभाव के कारण ही उसे अपनी इच्छाओं को दबाना पड़ता है। वह घर से दूर नौकरी करती है। पिता पक्षाघात से पीड़ित और रिटायर्ड होने के कारण वह अपनी चिंता कृष्णा मौसी को बताते हुए कहती है कि," मौसी! पिताजी को पेंशन मिलती ही कितनी है? उसमें तो दो वक्त दाल- रोटी भी न चले। मैं भी अगर न करुँ तो किसके आगे हाथ फैलाएँगे।"8 यह परिवार की आर्थिक समस्या को व्यक्त करता है। इसी आर्थिक परिस्थिति ने सुषमा को घर और नौकरी इन दो पाटों के बीच पिसते रहने के लिए विवश कर दिया है।

6) कुंवारी नारी की समस्या :-

स्त्रियों को समाज में अक्सर विविध सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है उसमें अगर कोई स्त्री विधवा, तलाकशुदा या कुंवारी है,तो समाज उसकीओर अलग नजरिए से देखता है। ' पचपन खंभे लाल दीवारें ' इस उपन्यास में सुषमा कुँवारी नारी की समस्या से पीड़ित है। सुषमा पारिवारिक जिम्मेदारियों का वहन करते- करते 33 वर्ष की हो गई है। चाह कर भी वह विवाह के बारे में सोचती नहीं और न चाहकर भी वह अपनी परिवारिक जिम्मेदारियों से अलग नही हो पाती। ऐसे समय समाज भी उसे बैठने नहीं देता। एक तरफ कृष्णा मौसी कहती है कि," कुछ अपने बारे में भी सोचा सुषमा यह भाई बहन किसी के नहीं होते सब अपने-अपने घर के होंगे आज की दुनिया में कौन किसका होता है"8 इसके साथ साथ मीरा धर कहती है," तुम शादी क्यों नहीं करती सुषमा? तुम देखने में अच्छी हो, कुलीन परिवार से आई हो।"9 ऐसे में जब सुषमा के जीवन में नील कश्यप आता है, तो वह नए सपने देखने लगती है, विवाह की उमंगे उसमें उठने लगती है। वह जब उसके साथ बाहर घूमने के लिए जाती है, खुशियों की नई दुनिया में खोने लगती है। ऐसे समय उसकी सहयोगी अध्यापिका मिस शास्त्री का रोमा डेविड को सुषमा के बारे में यह कहना कि," प्रिंसिपल तक रिपोर्ट पहुंच जाए तो बस काम बना समझो। सर्विस का तो कॉन्ट्रैक्ट होगा, पर वार्डनशिप छोड़ने को तो विवश किया ही जा सकता है।"10 इससे स्पष्ट होता है कि कुंवारी नारी को न समाज जीने देता है ना मरने देता है। ऐसी स्त्रियां हमेशा घुटन भरी जिंदगी जीने के लिए विवश हो जाती है

7) विवाह संबंधी समस्या:-

आज सामाजिक परिवर्तन में आए बदलाव के साथ-साथ प्रेम एवं विवाह के संबंध मेंभी काफी बदलाव आ रहा है। बावजूद इसीके स्त्रियां स्वतंत्र विचार रखते हुए भीअपने जीवन साथी का चयन नहीं कर सकती या अपने तरीके से जीवन जी नहीं पाती। इस उपन्यास की नायिका सुषमा का जीवन प्रेम की मधुरता और उसमें आयी विफलता के दंश से भरा हुआ है। सुषमा परिवार की बड़ी बेटी होने के नाते परिवार की सारी जिम्मेदारियां अपने कंधे पर उठाती है। परिणाम स्वरुप वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति की ओर ध्यानतक दे नहीं पाती। अपनी युवावस्था में वह पड़ोसी वकील बाबू के बेटे नारायण से प्रेम तो करती है लेकिन वकील बाबू नारायण की शादी किसी और से कर देते हैं। 33 वर्ष की सुषमा ने अपने जीवन को भुलाकर पूर्णतः परिवार की सेवा में लगा दिया है, ऐसे में अचानक उसके जीवन में नील नामक युवक का प्रवेश होता है, जो उससे 5 साल छोटा था। नील के आने से सुषमा के जीवन में हरियाली सी छा जाती है। वह विवाह के सपने देखने लगती है लेकिन परिवार के प्रति अपना कर्तव्य और नील के प्रति प्रेम दोनों के बीच फंसकर रह जाना उसकी नियति बन जाती है। नील के विवाह विषयक प्रस्ताव को लेकर उसका यह कहना कि," पहली बात तो नील यह है कि मेरी बहुत जिम्मेदारियाँ है। तुमसे तो कुछ भी छिपा नहीं है। पक्षाघात से पीड़ित बाबू, दो बहनें और भाई, सब मुझे ही करना है..."12 यह परिवार के प्रति उसके समर्पण भाव को व्यक्त करता है। वह चाहकर भी नील को अपना नहीं सकती। वह नील को अपने जीवन से चले जाने के लिए कहती है, तब नील क्रोधित होकर उसे कहता है," ठीक है, तुम यहीं रहो, इन पचपन खंभों में बंदी होकर मैं तुम्हारी बहकावे में आ गया था। मैं सोचने लगा था कि तुम्हारे लिए मैं ही सब कुछ बन गया हूँ। अब मैंने जाना कि तुम्हारे पास खूबसूरत चेहरे के अलावा एक व्यावहारिक बुद्धि और अपना भला समझने वाला दिमाग भी है।"13 नील के जाने पर सुषमा के जीवन में फिर उदासीनता एवं वीरानता छा जाती है यह सुषमा की विवाह विषयक समस्या को व्यक्त करता है।

8) अनमेल विवाह की समस्या:-

विवाह के समय जहां पति पत्नी के बीच आयु को लेकर अधिक फासला होता है, उसे अनमेल विवाह कहा जाता है। अनमेल विवाह की समस्या के कारण अक्सर पति-पत्नी के संबंधों में बिखराव आ जाता है और ऐसे समय नारी अपने सुख के लिए और पुरुष अपने सुख के लिए अलग रास्ते ढूंढने का प्रयास करने लगते हैं। उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में अकसर पति-पत्नी के जीवन में विवाह की समस्या दिखाई देती है। 'पचपन खंभे लाल दीवारें' इस उपन्यास की नायिका सुषमा भी इसी समस्या से ग्रस्त है। सुषमा की आयु 33 वर्ष की है और उससे 5 वर्ष कम आयु नील की है। सुषमा नील की ओर आकर्षित तो होती है लेकिन दोनों के बीच का आयु का फासला उसे विवाह के लिए स्वीकृति नहीं देता। उसकी सहेली मीनाक्षी के पूछने पर कि तू नील से शादी क्यों नहीं करती तब सुषमा का यह कहना कि," प्रेमिका और पत्नी में बहुत फर्क होता है फिर मैं यह नहीं चाहूंगी कि नील के मन में कभी भी यह विचार आए कि उससे गलती हुई।"14 यह उसके और नील के बीच आयु के फासले की चिंता को व्यक्त करता है। शायद वह यह सोचती होगी कि पारिवारिक, सामाजिक मर्यादा और उसमें अनमेल विवाह से न स्वयं का जीवन सुखी होगा न नील का। इसीलिए वह नील के साथ विवाह करने से बचती रहती है।

9) अविवाहीत स्त्री की समस्या :-

भारतीय समाज में स्त्रियों को विविध समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसे में विवाह को लेकर हो या अनमेल विवाह को लेकर हो, हर सामाजिक मुसीबतों का सामना स्त्री को ही करना पड़ता है। उसमें भी अगर वह अविवाहित है,तो समाज का उसकी ओर देखने का नजरिया कुछ और ही हो जाता है। समाज ऐसी स्त्रियों का जीना दूभर कर देता है उपन्यास में सुषमा अविवाहित स्त्री है। उसी कारण उसकी ओर कॉलेज की लड़कियां हो या उसकी सहेली अध्यापिका हो, अलग दृष्टि से देखती है। नील के साथ देखकर कॉलेज में सुषमा को लेकर तर्क वितर्क चलाया जाता है। उसकी कॉलेज में हो रही चर्चा के बारे में जब मीनाक्षी सुषमा को कहती है कि," सुषमा, तुम बुरा न मानना, मैं बहुत दिन से तुमसे वही बात कहना चाह रही थी।

होस्टल की लड़कियों में, स्टाफ- रूम में, नौकरों में, हर जगह आजकल तुम्हारी ही चर्चा है"15 यह सुनकर सुषमा दुखी हो जाती है। समाज के लांछन से तंग आकर स्वाति नामक लड़की ने तो आत्महत्या कर दी थी वही समाज अब सुषमा पर लांछन उठाने लगता है। सुषमा को लगता है कि अपनी विश्वासू सहेली मीनाक्षी को भी क्या मुझ पर भरोसा नहीं रहा ? लांछन से पीडित होकर उसका यह कहना कि," मीनाक्षी, तुम मुझ पर विश्वास नहीं करती ? क्या तुम मुझे स्वाति समझती हो?"16 उसकी सामाजिक उत्पीड़न की पीड़ा को ही व्यक्त करता है।

10) कामकाजी नारी की समस्या :-

आज सामाजिक व शैक्षिक विकास के कारण स्त्री ने अपने घर की चार दीवारों को लांगकर भले ही सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ अपने कर्तव्य और अधिकारों को साबित करने का प्रयास किया हो, बावजूद इसके उसे पुरुष- व्यवस्था द्वारा पग-पग पर छला जा रहा है, यह आज भी स्त्री को लेकर बड़ी विवंचना बनकर रह गई है। 'पचपन खंभे लाल दीवारें ' इस उपन्यास की नायिका सुषमा भी अपने परिवार के दायित्व में रात दिन मेहनत करती है और उसी दायित्व के नीचे उसका अपना अस्तित्व दबते जाता है। उसे अपनी कोई परवाह नहीं होती लेकिन नौकरी करने के कारण उसपर अनेक सामाजिक बंधन पड़ते जाते हैं, उसके उत्तरदायित्व का दायरा भी बढ़ते जाता है। उसकी सहेली का सुषमा को समझाते हुए यह कहना कि," सुषमा तुम अपना उत्तरदायित्व समझने की चेष्टा करो, तुम एक जिम्मेदारी के पद पर हो, तुम्हें अपनी छात्राओं के सम्मुख एक उदाहरण प्रस्तुत करना है"17 यह नौकरी करनेवाली कामकाजी स्त्री के सामने आनेवाली समस्याओं को व्यक्त करता है। सुषमा जैसी कामकाजी नारी भी अपने दायित्व को अधिक महत्व देते हुए अपने प्रेमी नील को छोड़ने के लिए विवश हो जाती है। मिस शास्त्री जैसी अध्यापिका, तो सुषमा के खिलाफ छात्राओं को लेकर अलग्अलग षड्यंत्र रचाती जाती है। उसका सुषमा के बारे में रोमा डेविड को यह कहना कि," प्रिंसिपल तक रिपोर्ट पहुँच जाए तो बस काम बना समझो। सर्विस का तो कांट्रैक्ट होगा, पर वार्डनशिप छोड़ने को विवश किया ही जा सकता है।"18 यह कामकाज में स्त्रियों के सामने आनेवाली समस्याओं कोही व्यक्त करता है।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार ' पचपन खंभे लाल दीवारें ' इस उपन्यास में उषा प्रियंवदा ने सुषमा के माध्यम से एक भारतीय नारी की मानसिक घुटन को प्रस्तुत किया है जहां सुषमा अपने परिवार की जिम्मेदारी को लेकर स्वयं को समर्पित करती है, वहाँ कामकाजी नारी होने के नाते स्वयं पर आत्मनिर्भर होकर भी स्वयं के जीवन के बारे में सोचती नहीं। अविवाहित होने के कारण उस पर समाज ताने लगाते रहता है, उस पर लांछन उठाते रहता है। ऐसे समय सुषमा के जीवन में नील नामक युवक आता है मानो उसके जीवन में उसने हरियाली फैलाई थी, लेकिन वह उसकी तरफ आकर्षित होकर भी उसके साथ विवाह नहीं कर पाती। क्योंकि उसके और विवाह के बीच सामाजिक बंधन और पारिवारिक जिम्मेदारियां आ जाती है।

[1] उषा प्रियंवदा ने इस उपन्यास में आर्थिक समस्या से त्रस्त नारी पीड़ा को विवेचन किया है।

[2] आधुनिक शिक्षा को प्राप्त करने के बावजूद भी स्त्री को लेकर परंपरागत मान्यताओं की दीवारें आज भी बरकरार है। यही परंपरागत मान्यताएँ सुषमा को भी पचपन खंभे लाल दीवारों के बीच घुट-घुट कर जीने के लिए विवश करती है।

- पारिवारिक दायित्व के बीच अपनी इच्छा आकांक्षाओं को दबानेवाली नारीकी मानसिक घुटन का चित्र लेखिका ने यह चित्रित किया है।
- उपन्यास की नारी पात्रों सुषमा के बहाने कामकाजी नारी की समस्या को भी लेखिका ने इस उपन्यास में उठाया है।
- अविवाहित नारी की ओर एक भेड़िए की तरह देखने का नजरिया आज भी समाज में दिखाई देता है, जो नारी शोषण के लिए जिम्मेदार है।
- आधुनिक कहे जानेवाले भारतीय समाज में आज भी विवाह को लेकर प्रेम से भी बढ़कर धन - दौलत को माना जा रहा है, यह इस समाज की बड़ी विवंचना है।

- उपन्यास की नायिका सुषमा के लिए एक ओर पारिवारिक जिम्मेदारियां निभाना आदर्श है, तो दूसरी ओर अपनी इच्छाओं - आकांक्षाओं की पूर्ति करना भी एक यथार्थ है। लेखिका ने यहां सुषमाको आदर्श और यथार्थ के बीच पिसती हुई दिखाया है।

कुल मिलाकर उषा प्रियंवदा का ' पचपन खंभे लाल दीवारें ' यह उपन्यास नारी की मानसिक घुटन को प्रस्तुत करता है, जो पारिवारिक जिम्मेदारियां और सामाजिक बंधनों के बीच अपनी इच्छाओं को दबा देती है परिवार और समाज भी उसकी इच्छा-आकांक्षाओं को समझ नहीं पाता। स्त्री और पुरुष इस समाज रूपी रथ के दो पहिए हैं और समाज के विकास के लिए दो पहियों का समान रूप से आगे बढ़ना आवश्यक है। अतः पुरुष प्रधान समाज को स्त्री के अधिकारों एवं कर्तव्यों को समझना आवश्यक है। साथ- ही- साथ स्त्री को अपने बराबर का स्थान देकर समाज एवं राष्ट्र के विकास में उसके सहयोग एवं योगदान को स्वीकारना आवश्यक है। तभी समाज में समता और सौहार्द की भावना बनी रहेगी और स्त्रियों पर पुरुषों द्वारा हो रहे अन्याय-अत्याचार रुक जाएंगे, उसे भी जीवन जीने का आनंद मिल पाएगा अतः हमें इस दिशा में अपने कदम उठाने चाहिए।

संदर्भ सूची:-

1) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ. 10
2) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ. 10-11
3) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ.37
4) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ. 37
5) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ. 71
6) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ. 105
7) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ. 111
8) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ. 10
9) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ. 63
10) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ. 81-82
11) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ. 105
12) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ. 104
13) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ. 105
14) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ. 99
15) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ. 49-50
16) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ. 50
17) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ. 50
18) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ. 81-82